योग्यता का रहस्य

जैन न्याय में ‘ज्ञान’ की उत्पत्ति और विषय-प्रतिनियम की मीमांसा (न्याय दीपिका पर आधारित)

www.JainKosh.org

हम वही क्यों जानते हैं, जो हम जानते हैं?

जब दुनिया में अनंत पदार्थ मौजूद हैं, तो एक समय में हमारे ज्ञान का विषय कोई एक विशिष्ट पदार्थ ही क्यों बनता है?

जैन न्याय की भाषा में इसे 'विषय प्रतिनियम' (Specific Object Determinacy) कहते हैं।

www.JainKosh.org

क्या ज्ञान बाहरी पदार्थों की देन है? (बौद्ध मत)

तदुत्पत्तिः ज्ञान बाहरी वस्तु (अर्थ) से उत्पन्न होता है।

तदाकारः ज्ञान बाहरी वस्तु के आकार (रूप/गुण) को ग्रहण कर लेता है।

शंकाः यदि वस्तु से ज्ञान उत्पन्न नहीं होता, तो ज्ञान को कैसे पता चलता है कि उसे किस विशिष्ट वस्तु को जानना है?

www.JainKosh.org

अन्वय-व्यतिरेक परीक्षण: क्या बाह्य साधन ज्ञान के जनक हैं?

व्यतिरेक दोष
प्रकाश (आलोक) नहीं है, फिर भी बिल्ली को ज्ञान हो रहा है। (कारण नहीं, फिर भी कार्य)

अन्वय दोष
दिन का प्रकाश मौजूद है, फिर भी उल्लू को ज्ञान नहीं हो रहा है। (कारण है, फिर भी कार्य नहीं)

निष्कर्ष: अतः, अर्थ (पदार्थ) और आलोक (प्रकाश) ज्ञान के उत्पादक नहीं हो सकते।

www.JainKosh.org

ज्ञान वस्तुओं का प्रकाशक है, वस्तुओं का कार्य नहीं

"ना अर्थालोकौ कारणम्"

दीपक घड़े को प्रकाशित करता है, लेकिन दीपक का प्रकाश घड़े से पैदा नहीं होता।

www.JainKosh.org

तो फिर विषय-प्रतिनियम कैसे होता है?

जब यह पूछा गया कि बिना वस्तु से उत्पन्न हुए, ज्ञान किसी विशेष वस्तु को ही कैसे जानता है?
आचार्य अभिनव धर्मभूषण यति का उत्तर: योग्यता ही विषय प्रतिनियम का कारण है।

www.JainKosh.org

योग्यता क्या है? (सूत्र का विश्लेषण)

स्वावरण क्षयोपशम लक्षण योग्यतया प्रतिनियतमर्थं व्यवस्थापयति

स्वावरण

उस विशिष्ट ज्ञान को रोकने वाला अपना 'ज्ञानावरण' कर्म।

क्षयोपशम

उस आवरण का हटना या ज्ञान की निर्मलता का प्रगट होना।

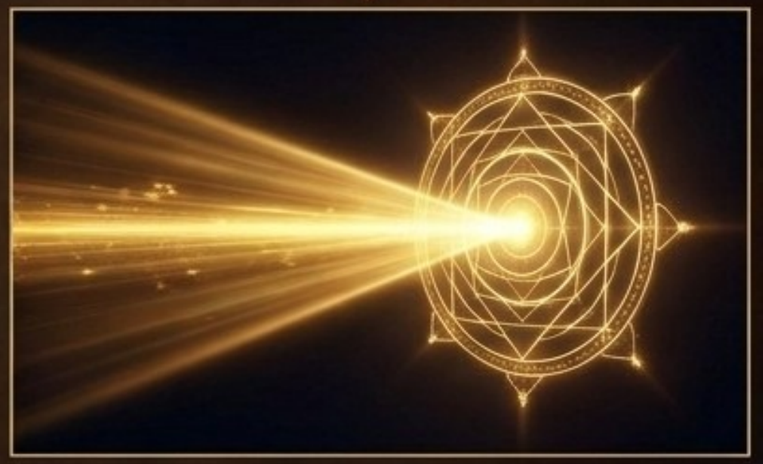

व्यवस्थापयति

इसी क्षमता (योग्यता) से विशिष्ट पदार्थ को जानने की व्यवस्था बनती है।

निष्कर्ष : योग्यता = ज्ञान पर पड़े विशिष्ट आवरण का हटना

www.JainKosh.org

योग्यता की कार्यप्रणाली: 'पावर ग्रिड' का दृष्टांत

विशिष्ट क्षयोपशम

भक्ति, विशुद्धि या अभ्यास से क्षमता (Voltage) का बढ़ना, जिससे गूढ़ विषय समझ आते हैं।

सामान्य क्षयोपशम

सामान्य योग्यता (जैसे रोजमर्रा के विषयों को जानना)।

ज्ञान एक 'पावर' (कैपेसिटी) है। अलग-अलग वस्तुओं को जानने के लिए अलग 'कनेक्शन' नहीं चाहिए, बल्कि अपनी आंतरिक क्षमता (Voltage) बढ़ानी होती है।

www.JainKosh.org

भ्रांति निवारण: क्या हर वस्तु के लिए एक अलग 'कर्म' होता है?

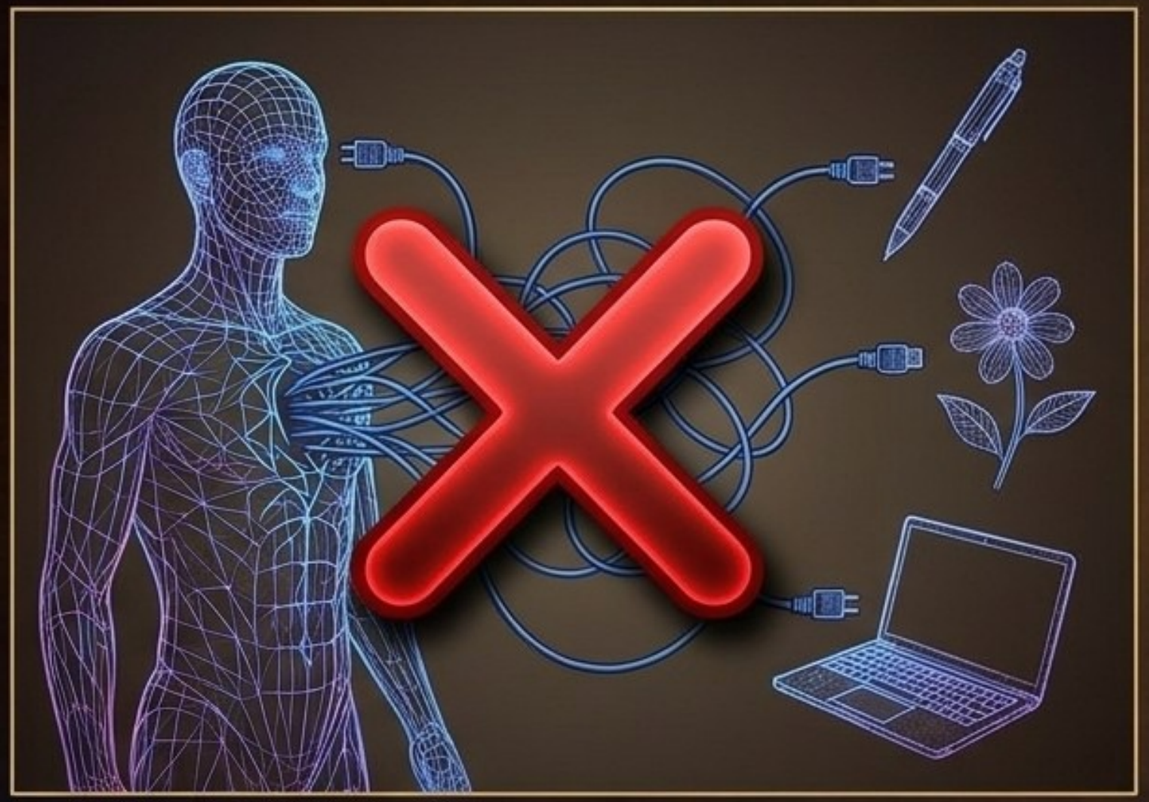

गलत धारणा

अनंत ज्ञेयों के लिए अनंत कर्म?
इम्पैक्टिकल!

सही धारणा

एक ही ज्ञान क्षमता (उघाड़) का विभिन्न वस्तुओं को जानने में प्रयोग। ज्ञानावरण के भेद केवल असंख्यात हैं।

www.JainKosh.org

क्षमता (Capacity) पर्याप्त नहीं, ध्यान (Attention) भी चाहिए

योग्यता (क्षयोपशम) + **उपयोग (ज्ञान का व्यापार)** = **विशिष्ट वस्तु का ज्ञान**

आप 15 मिनट से चटाई पर बैठे हैं। आपके पास स्पर्श को जानने की 'योग्यता' मौजूद है।

लेकिन उसका ज्ञान आपको तभी होता है, जब आपका 'उपयोग' (ध्यान) उस स्पर्श की ओर जाता है।

निष्कर्ष: योग्यता होने पर भी ज्ञान तब तक प्रगट नहीं होता, जब तक उपयोग न लगे।

www.JainKosh.org

मनोविज्ञान और योग्यता: सामने रखी वस्तु क्यों नहीं दिखती?

बाह्य पदार्थ मौजूद होने पर भी यदि आंतरिक 'योग्यता' और 'उपयोग'
सही नहीं है, तो विषय प्रतिनियम नहीं होता।

www.JainKosh.org

ज्ञानाकार vs ज्ञेयाकार: दर्पण और मोर का दृष्टांत

जब ज्ञान वस्तु को जानता है, तो वह वस्तु रूप (लाल/पीला/मीठा) नहीं हो जाता, बल्कि अपनी ही स्वच्छता में परिणमता है।

यह मोर नहीं है...

ज्ञान में जो झलक रहा है, वह बाहरी वस्तु नहीं, बल्कि ज्ञान की अपनी ज्ञानाकार परिणति है।

...यह दर्पण की अपनी स्वच्छता (परिणमन) है।

www.JainKosh.org

विषय-प्रतिनियम: एक तुलनात्मक मैट्रिक्स

तुलना के बिंदु	बौद्ध मत (सौगत)	जैन न्याय (अभिनव धर्मभूषण यति)
ज्ञान का कारण	बाह्य पदार्थ (अर्थ)	आंतरिक योग्यता (क्षयोपशम)
कार्य-कारण संबंध	तदुत्पत्ति (पदार्थ से ज्ञान पैदा होता है)	ज्ञान केवल प्रकाशक है
रूपक (Metaphor)	(कोई उपयुक्त रूपक नहीं)	दीपक और दर्पण
निष्कर्ष	अमान्य	मान्य

www.JainKosh.org

ब्रह्मांड में घटनाओं का कारण: एक सार्वभौमिक उत्तर

जीवन में अकारण होने वाली घटनाओं या अचानक आने वाले विचारों का क्या कारण है? उत्तर है: योग्यता।

बाहरी संयोग केवल निमित्त मात्र हैं।

यह कोई टालने वाला उत्तर नहीं है। यह स्वीकारोक्ति है कि प्रत्येक कार्य के होने में द्रव्यों की अपनी अपनी आंतरिक परिणमन क्षमता ही मुख्य कारण होती है।

www.JainKosh.org

शक्ति भीतर है, बाहर नहीं।

- ज्ञान किसी बाहरी पदार्थ का मोहताज नहीं है। उसका स्वभाव ही प्रकाशित करना है।
- अपनी योग्यता (क्षयोपशम) को विशुद्धि, ध्यान और अभ्यास से बढ़ाएं।
- जैसे-जैसे योग्यता का वोल्टेज बढ़ेगा, ज्ञान का दायरा स्वतः प्रकाशित हो जाएगा।

www.JainKosh.org